E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

आधुनिकता बोध के परिप्रेक्ष्य में जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कहानियाँ

तपस्या चौहान
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

आधुनिकता बोध एक तार्किक दृष्टिकोण है जिसका सीमांकन करना व्यर्थ है क्योंकि यह नवीन तार्किक दृष्टिकोण किसी एक युग की देन न होकर प्रत्येक युग में एक नये रूप में पुरानी विचारधाराओं और परंपराओं का मूल्यांकन कर सामने आता है। आधुनिकता बोध वह ज्ञान है जो पुरानी विचारधाराओं में व्याप्त जड़ तत्त्वों को त्यागकर उसमें गतिशील तत्त्वों अर्थात् नवीन विचारों का समावेश कर आगे बढ़ती। यह इतिहास से सीख लेकर उसमें व्याप्त जड़ तत्त्वों को छोड़कर उसके गतिशील व क्रियाशील; केवल उन्ही व्याप्त जड़ तत्त्वों को अंदर समाहित करने की स्वीकृति प्रदान करती है जो नवजागरण से उत्पन्न हुए बोध को गति प्रदान करें। आधुनिकता बोध के घटक आधुनिकता को आकार प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, यथार्थ के प्रति स्वचेतना प्रदान करता है। आधुनिकता बोध व्यक्ति को तर्क सम्मत विवेकपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है जिससे वह किसी भी विचारधारा को ईश्वरी घोषणा मानकर यूँही नहीं स्वीकार करता बल्कि उसे बुद्धि व विवेक से तर्क के निष्कष पर मूल्यांकन करने के पश्चात ही उसे ग्रहण करता है। आधुनिकता बोध जहाँ व्यक्ति को विकल्पों को मूल्यांकित कर उन्हें ग्रहण करने की स्वतन्त्रता प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर वह इस तर्कशील चेतना का अनुसरण करते हुए इतना आगे बढ़ जाती है कि उसकी भावना एवं संवेदनाओं का रस सूख जाता है। जिस कारण वह अकेलपान, विजातीयता, अंतर्द्वद्व आदि की ओर बढ़ता रहता है। इन समस्याओं को कृति निर्माता साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज से इस संदर्भ में संवाद स्थापित करते हुए उन्हें विचार मंथन हेतु विवश कर देते हैं। जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के एक ऐसे ही मार्गदर्शक हैं। इनकी कहानियों में आधुनिकता बोध के बीज तत्वों को खोजने का प्रयत्न किया गया है।

मुख्य शब्द : आधुनिकता बोध, स्वचेतना, अकेलापन, विजातीयता, अन्तर्द्वंद्व, आर्थिक वैषम्य।

प्रस्तावना

ईश्वर केंद्रित आस्था के स्थान पर मानव केंद्रित तर्कशील दृष्टिकोण ही आधुनिता बोध है। सामान्यतः भारत में आधुनिकता बोध ब्रिटिश शासन काल के साथ आया ऐसा माना गया है। किन्तु आधुनिकता बोध की यह प्रवृत्ति पूर्णतः पाश्चात्य न होकर भारतीय विचारों से भी सम्बद्ध है। यही कारण है कि इसमें ऐतिहासिकता तथा परम्परा के अणु दृष्टिगत होते हैं। साहित्य ने भी इसे स्वीकारा है, तभी तो आधुनिक भारतीय साहित्य में कहीं न कहीं परम्परा से जुड़े तंतु प्राप्त हो ही जाते हैं। इसलिये आधुनिकता बोध के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत व उसके संघटक तत्वों के विषय में चर्चा करते हुए जयशंकर प्रसाद की कहानियों में आधुनिकता बोध के लक्षणों का अन्वेषण करना अनिवार्य है इसके पश्चात ही निष्कर्ष प्राप्त हो सकेंगे।

अध्ययन का उद्देश्य

आधुनिक, आधुनिकीकरण, आधुनिकता, आधुनिकता बोध का अध्ययन करते हुए आधुनिकता बोध के परिप्रेक्ष्य में जयशंकर प्रसाद की कहानियों को विश्लेषित करना।

आधुनिक एक कालावाची शब्द है जिसका प्रयोग वर्तमान काल के लिए किया जाता है। प्रत्येक युग का वर्तमान काल अथवा वर्तमान समय आधुनिक काल कहा जाता है। जो आज आधुनिक प्रवृत्ति है समयांतराल के पश्चात वह भूत बन जाती है और आधुनिक शब्द पुनः वर्तमान पर पहुँच जाता हैं दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आधुनिक प्रवृत्तियाँ भूतकाल में समाविष्ट हो जाती हैं, किंतु आधुनिक शब्द ज्यों का त्यों समय सीमा से परे सदैव स्थिर रहता है। किसी

समय विशेष की वर्तमान प्रवृत्तियाँ शनैः शनैः जाती हैं और उस पर नवीन प्रवृत्तियाँ अपना प्रभाव जमाकर अस्तित्व में आ जाती हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। आधुनिक शब्द प्रत्येक प्रवृत्ति से आत्मसात् कर उसी स्थान पर तटस्थ रहता है। इसकी अपनी कोई प्रवृत्ति या परिस्थिति विशेष नहीं है। यह एक शब्द मात्र है। इस संदर्भ में डॉ0 गो0 रा0 कुलकर्णी का मानना है कि "'आधुनिक' शब्द अंग्रेजी के 'मॉडर्न' शब्द से बना है, हमारे यहाँ 'आधुनिक' शब्द पहले नहीं था। हाँ, संस्कृत में 'अधुना' शब्द अवश्य मिलता है, मगर इसका अर्थ आधुनिक के मूल अभिप्रायः से न होकर कालगत पक्ष से है। अंग्रेजी का 'मॉडर्न' शब्द मूल लैटिन शब्द 'मोडो' (Modo) से बना है। शब्दकोश में इस शब्द का अर्थ है Modo-lately, Just now और मॉडर्न का अर्थ है Being or existing of this time, present. इस आधुनिक शब्द से आधुनिकता शब्द बनता है।"[1] आधुनिक शब्द 'अधुना' से व्युत्पन्न हुआ है। बृहत हिन्दी कोश में इसका अर्थ 'अब', 'इस समय', 'इन दिनों' दिया गया है।[2] अंग्रेजी में मॉडर्न तथा पाश्चात्य देशों में मॉर्डनिटी शब्द को धार्मिक दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित किया। वहीं हिंदी साहित्य में आधुनिक शब्द का प्रयोग काल सापेक्ष व समसामयिक के अर्थ में हुआ। यह वर्तमान समय को इंगित करता है। यह एक समयावधि अथवा काल विशेष की संज्ञा के रूप में सूचना देता है। हिंदी साहित्य में इसका आरंभ सन् 1900 से माना गया। यदि कोशगत अर्थ के विषय में चर्चा करें तो इसे पुराने से आगे नया माना गया है। जिसमें नयापन है वही आधुनिक है। यह व्यतीत को कल मानकर पुराना तथा आने वाले को नया अर्थात् आधुनिक के रूप में व्याख्यायित करता है। कबीर, सूर, तुलसी आदि कवि भी अपने युग में आधुनिक थे।

अतः सामान्यतः आधुनिक शब्द कालवाची है जो 'भूत' अथवा व्यतीत हुए को पुराना तथा आने वाले को नया की संज्ञा प्रदान करता है। अधिकतर विद्वानों का यही मत है कि यह समय सापेक्ष है। इस प्रकार प्रत्येक युग में आधुनिक की उपस्थिति है। यदि हिंदी साहित्य के विषय में विचार करें तो हिन्दी साहित्य को विद्वानों ने अपने–अपने मतानुसार काल खण्डों में विभक्त किया है। इन सभी कालों के कृतिकर्ता अपने–अपने युग में आधुनिक रहे हैं क्योंकि यह शब्द वर्तमान व समसामयकिता का द्योतक है। किंतु जब इसका प्रयोग विशिष्ट अर्थों में किया जाता है तो यह एक युग विशेष की ओर संकेत करता है। यह आधुनिक युग जो विभिन्न परिवर्तनों व प्रतिक्रियाओं से युक्त था, उसके परिचय हेतु प्रयोग किया जाता है। यह शब्द एक विशिष्ट जीवन दर्शन के संदर्भ में भी प्रयुक्त होता है। जिसमें पुराने का परित्याग व नवीनता का ग्रहण हो; यह समय आधुनिक कहलाने लगता है। वर्तमान समय में मानव स्वयं को आधुनिक सिद्ध करने की एक अंधी दौड़ में प्रतिभागी के रूप में धावक की भूमिका का निर्वहन कर रहा है। नये–नये विचार, रहन–सहन, फैशन, बोली–भाषा से आत्मसात कर नयेपन को दर्शाने हेतु निरंतर प्रयासरत है किंतु सत्यता तो यह है कि नये कलेवर को ओढ़ लेना आधुनिक होना नहीं है अपिंतु स्वचेतना से युक्त मनुष्य ही आधुनिक है। जब यह स्वचेतना कार्य करने लगती है तो आधुनिकता का आंरभ होता है। आधुनिकता से पूर्व औद्योगिकरण महत्त्वपूर्ण क्रिया है जो आधुनिकता का सेतु निर्माण करता है। इसका अवलोकन भी अनिवार्य है। आधुनिकीकरण की समाज के सरंचनात्मक परिवर्तन के संदर्भ में व्याख्या की जाती है। यह परिवर्तन नई भूमिकाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यही प्रक्रिया भौतिक रूप से समाज में आधुनिकीकरण का कारण बनती है।

18वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के आने पर यांत्रिक समाज में परिवर्तन होने लगा। अब सावयवी समाज ने यांत्रिक समाज पर अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर दिया जिसके कारण आधुनिकीकरण अस्तित्व में आने लगा। सभी क्षेत्रों में पण्यीकरण दिखाई देने लगा। समयांतराल के पश्चात बाजार में चाहें ललित कलाएँ हों या फिर प्रकृति प्राप्त जल, सभी बाजार में बिकने लगा अतः समाज में व्याप्त सभी कार्यप्रणाली, संघटन एवं व्यवस्थाओं आदि की नये ढंग से व्याख्या प्रस्तुत की जाने लगी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज का पण्यकीरण होने पर उसकी परंपराओं, कार्यप्रणालियों व संघटनों की व्याख्या एक नये ढंग से होने लगी जो आधुनिकीकरण है।

भारत में आधुनिकीकरण को अन्य देशों की अपेक्षा भिन्न दृष्टि से देखा गया पुरानी व्यवस्थाएँ, संस्थाएँ व गतिविधियाँ पुनः अस्तित्व में आने लगी। उदाहरण के तौर पर टी.वी. व रेडियो पर धर्म–गुरूओं में प्रवचन व उपदेशों की आज भरमार है। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण लोग मशीन का उपयोग कर उत्पादन में वृद्धि कर रहे हैं, जिससे अर्जित लाभ से वह समाज में अपना कद व पद बढ़ाने हेतु संघर्षरत हैं। लोग नगरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं जिससे एकांकी परिवारों में वृद्धि, वृद्धों का अनादर, समाज में नैतिकता का पतन व भौतिकवाद तथा विलासिता में निरंतर वृद्धि हो रही है।

भारत में आधुनिकीकरण पाश्चात्य संस्कृति व अंग्रेजों की देन है जिसके फलसस्वरूप भारत की सामाजिक संरचना, परंपरा व संस्कृति में अनेक परिवर्तन हुए। किंतु यह परिवर्तन पूर्ण रूप से न होकर आंशिक रूप से था। भारत में अंग्रेजों के आने के पश्चात ही आधुनिक सांस्कृतिक संस्थाओं तथा सामाजिक संरचनाओं के स्वरूपों को अस्तित्व में लाया गया। सर्वप्रथम औधोगिक क्रांति व समाज सुधार के माध्यम से परिवर्तन लाना आरंभ हुआ।

आधुनिकीकरण भौतिक परिवर्तन का वह स्तर है जिसके प्रभाव से व्यक्ति के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सांस्कृतिक क्षेत्र एक नई दिशा को प्राप्त करते हुए आगे बढते हैं। मनुष्य द्वारा लाये गए वे भौतिक परिवर्तन जो उसके सामाजिक, आर्थिक (पारम्परिक, सांस्कृतिक, धार्मिक) रूप से व्यक्ति की जीवन शैली को प्रभावित करे, वह आधुनिकीकरण है। आधुनिकता का पहला दौर आधुनिकीकरण से जन्में नवजागराण पर टिका है। उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजो द्वारा लागू की गई पाश्चात्य शिक्षा तथा आधुनिकीकरण ने भारतीयों की संकुचित सोच को तोड़ा जिसमें उनमें नवीन विचारधारा

जाग्रत हुई। यहीं से आधुनिकता का प्रथम दौर आरंभ होता है।

आधुनिकता बोध

सामान्यतः आधुनिक एक कालवाचक शब्द है। यह नवीनता का द्योतक हैं प्रस्तुत, वर्तमान, समसामयिक, समकालिक, समकालीन, आर्वाचीन, साम्प्रतिक आदि में इसका थोड़ी–बहुत अर्थ वैविध्य प्राप्त होता है। ''आधुनिक विशेषण शब्द में हिन्दी का 'ता' प्रत्यय लगाने से 'आधुनिकता' भाववाचक संज्ञा बनती है जिसका अर्थ होगा–आधुनिक होने का भाव या स्थिति, आधुनिक वस्तुओं, स्थितियों, गतिविधियों, परिवेश व माहौल को समेटे हुए गुण धर्म या भाव की संग्रथित, समंजित, सम्मुच्चयित स्थिति, भावना या अवस्था। 'आधुनिकता' के लिए आधुनिक ही आधार प्रदान करता है। 'आधुनिक' से होकर आधुनिकता में प्रवेश होगा।''[3] आधुनिक से आधुनिकता में प्रवेश के पश्चात् नवीन विचारधाराओं व दृष्टिकोण से आत्मसात् जीवन में नव्यता का अनुभव करता है किंतु उसके जीवन में नव्यता आधुनिकता का बोध होने पर उत्पन्न होती है। क्योंकि ''मनुष्य की सारी क्रियाओं और गतिशील प्रवृत्तियों का मूल कारण बोध ही है। बोध का विकास सामाजिक वातावरण के सम्पर्क से होता है। वातावरण के प्रभाव से मनुष्य नैतिकता, औचित्य और व्यवहार कुशलता प्राप्त करता है। यह बोध का विकास कहा जाता है।''[4]

अतः बोध वह ज्ञान अथवा जानकारी है जो व्यक्ति द्वारा इन्द्रियों के माध्यम से अनुभव की जाती है। बोध साहित्यकार को उसके परिवेशीय क्रिया–प्रतिक्रियाओं के प्रति संवेदनशील बनाकर उसकी लेखनी के माध्यम् से शब्दबद्ध होता है। जो समाज व देश को प्रभावित करते हुए सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास करता है।

आधुनिकता बोध के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मत प्रस्तुत करने से पूर्व आधुनिकता को स्पष्ट करना अनिवार्य है इसके संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अपने मत इस प्रकार प्रस्तुत किये हैं–

डॉ. गिरिजाकुमार माथुर आधुनिकता के संदर्भ में लिखते है कि– ''आधुनिकता परिवर्तित भावबोध की वह स्थिति है, जिसका प्रादुर्भाव यान्त्रिक तथा वैज्ञानिक विकास–क्रम के वर्तमान बिन्दु पर आकर हुआ है।''[5] डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का मत है ''आधुनिकता इतिहास की सजग और सचेतन प्रतीति है और उस इतिहास चक्र को द्रुततर चलाने की चेष्टा है।''[6]दिनकर आधुनिकता के विषय में लिखते है कि ''आधुनिकता एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अन्धविश्वास से बाहर निकालने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनाने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया धर्म से सही रूप पर पहुँचने की प्रक्रिया है।''[7] तथा लक्ष्मीकांत वर्मा का मानना है कि''आधुनिकता इसलिए कोई रूढ़ि नहीं है, वह एक ऐतिहासिक परिधि है जो एक युग के मानसिक धरातल को कुछ नयी उपलब्धियों के अनुसार काटती–छाँटती है अथवा उसमें नए संदर्भ जोड़ती है और पुरानों को या ऐसें को जो सतत गतिशील नहीं रह पाते, अपने से पृथक् भी करती है।''[8]

'आधुनिकता' के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतों पर विचार करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यह एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका संबंध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी न किसी रूप से इतिहास से रहता है। यह ऐतिहासिक रूप से स्वयं को पूर्णतः विलग नहीं कर सकती। यह एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया है जो निर्बाध गति से उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है तथा जड़ व रूढ़ तत्त्वों का परित्याग करती हुई सतत् प्रवाहमान रहती है।

आधुनिकता बोध ऐतिहासिकता से विश्रृंखलित नहीं रह सकती। इस संदर्भ में डॉ. नगेन्द्र का मानना है कि ''परंपरा का संशोधन, जीवन के दैविध्य की स्पृहा, अपने पर्यावरण के माध्यम से आत्मसिद्धि विकास की आकांक्षा आदि ही आधुनिक बोध के लक्षण है।''[9] अतः आधुनिकता बोध के संदर्भ में विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रस्तुत किये हैं– राजेन्द्र यादव लिखते हैं''आधुनिकता'' मेरी समझ में एक दृष्टि है, धीरे–धीरे आपको उन पुराने, मूल्यों, धाराओं से मुक्त होने की दिशा में प्रेरित करती है.... आधुनिकता की सबसे अच्छी शुरूआत यहाँ से होती है, जहाँ हम सबसे पहले स्थापित मान्यताओं और धारणाओं की कवैश्चन करना शुरू करते हैं, चाहे वह कबीर ने की हो, चाहे नानक ने की हो, चाहे आज के आदमी ने, इन लोगों ने अपने समय के मूल्यों और स्थापित मान्यताओं को कवैश्चन करने की कोशिश की। .....आधुनिक ज्ञान, विज्ञान, तनाव, बोध के कारण आप में जो प्रश्न दृष्टि तैयार होती है, उसे हम आधुनिकता बोध कहते है।''[10]इसी संदर्भ में दूधनाथ सिंह का मानना है कि ''आधुनिकता बोध से मेरा तात्पर्य है कि जो चीज हमारी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थितियों में हमारी अनुभूति और हमारा भाव बोध बना रहा हो, यानि जो ..... घटनाओं का प्रभाव, उन घटनाओं से छनकर आने वाले निर्णय आधुनिकता बोध के अन्तर्गत आते हैं।''[11] जितेन्द्र भाटिया आधुनिकता बोध के विषय में लिखते हैं कि'' हम आधुनिकता बोध के अन्दर वे सारी चीजे समेटते हैं, जिनमें हम आज जी रहे हैं और तमाम राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दबाव इस शब्द के अन्तर्गत आते है जिसमें आज का आदमी जी रहा है।''[12]

आधुनिकता बोध के विषय में विभिन्न विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत मतों का विश्लेषण करने के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिकता बोध वह प्रतिक्रिया है जो प्रश्नाकूलता के निकषॅ पर विभिन्न विकल्पों का मूल्यांकन करने के पश्चात् ही किसी भी विकल्प को स्वीकार करने की स्वीकृति प्रदान करती है। उचित–अनुचित गतिविधियों के प्रति अस्वीकार व स्वीकार व्यक्ति आत्मकेन्द्रित होकर स्वचेतना से युक्त निर्णय से सम्बद्ध है। जो परिवर्तनों के प्रति अत्यंत जागरूक रहता है क्योंकि यही परिवर्तन उसके विकास के धरातल को दृढ़ता प्रदान करते हैं। विकास की यह क्रिया सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त उन सभी जड़ तत्त्वों का परित्याग अथवा अस्वीकार कर देती है, जो कि तर्क संगत न हो। आधुनिकता बोध ही वह वैज्ञानिक तथा तार्किक दृष्टिकोण है जिसे व्यक्ति किसी भी निर्णय के समय प्रयोग करता है। उसके भीतर तार्किक दृष्टिकोण की उत्पत्ति स्वतः ही नहीं होती। इसके संचालन में

विभिन्न प्रेरक अथवा घटक कार्य करते हैं। यही नवीन दृष्टिकोण आधुनिकता बोध है जो परंपराओं के जड़ तत्त्वों को अस्वीकृत कर गतिशील तत्त्वों को ग्रहण करते हुए आगे बढ़ती रहती है। चूंकि व्यक्ति संवेदनात्मक रूप से इससे जुड़ा रहता है इसिलए आधुनिकता इसे पूर्णतः अस्वीकार नहीं करती। इसके साथ ही वह ऐतिहासिकता से भी सम्बद्ध रहती है।

आधुनिकता के संघटक तत्त्व आधुनिकता को जीवन्त प्रक्रिया बनाये रखने के लिए विभिन्न तत्त्व समन्वित रूप से क्रियाशील रहते हैं। विभिन्न विचारधाराएँ,परिवेश, दृष्टिकोण एवं घटनाओं के विश्लेषण द्वारा आधुनिकता की आवधारणा को विकसित करने वाले तत्त्वों के विषय में जाना जा सकता है। चूँकि आधुनिकता एक जीवन्त प्रक्रिया है इसका विश्लेषण करना तभी उपर्युक्त होगा जब हमें यह ज्ञात हो कि आधुनिकता के स्वरूप निर्धारण की प्रक्रिया में किस प्रकार से ये तत्व एकत्रित होकर एक बोध का रूप धारण कर लेते हैं।

बदलता हुआ परिवेश आधुनिकता बोध को आकार प्रदान करता है।ब्रिटिश शासन के क्रिया–कलापो, ने भारतीय जीवन को उलट–पलट कर दिया तथा भारतीय जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश को प्रभावित किया। ब्रिटिश शासन के विरोध का सभी भारतवासियों ने अपने–अपने स्तर से प्रयास किया। ये प्रयास भौतिक–स्तर के साथ–साथ वैचारिक तथा साहित्यिक स्तर पर भी किए गये। साहित्यकारों ने अपनी साहित्य सृजन–प्रक्रिया के माध्यम से जन सामान्य में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु क्रांतिकारी चेतना का संचार किया। प्रेम और भक्ति का स्थान जब राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति ने ले लिया था। बदलाब की यह स्थिति आधुनिकता के एक तत्व के रूप में सामने आती है। ब्रिटिश शासन के कारण परिवेश प्रभावित हुआ परिणामस्वरूप द्वन्द्वात्मक परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई। द्वन्द्वात्मक परिवेश ने एक नवीन युग को जन्म दिया जिसे आधुनिक युग की संज्ञा प्रदान की गई। अतः यह माना जा सकता है कि परिवेश के कारण ही साहित्यकारों का ध्यान साहित्य–सृजन की नवीन दिशा की ओर गया जिसे आधुनिकता की शुरूआत कहा गया। परिवेश का बदलता स्वरूप आधुनिकता का एक संयोजी तत्व है जो अन्य तत्त्वों से मिलकर आधुनिकता की प्रक्रिया को जीवन्त प्रक्रिया बनाता है। इस प्रक्रिया में विभिन्न विचारधाराएँ महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। जब दो विरोधी विचारधाराएँ एक दूसरे से टकराती है तो इस टकराव से नवीन विचारधारा उत्पन्न होती है यह विचारधारा उन दोनों विचारधाराओं का मिश्रण न होकर एक नयी सर्जना है किंतु यह अवश्य है कि ये विचारधारा उन दोनों से अवश्य प्रभावित होती हैं।

वैज्ञानिक चेतना मध्य युग को आधुनिक युग से पृथक करती है। मध्य युग का प्राण तत्व आस्था थी वहीं आधुनिक युग वैज्ञानिक सोच पर आधारित है जिसके केन्द्र में मनुष्य है। वैज्ञानिक चेतना से तात्पर्य यंत्रीकरण या मशीनीकरण से नहीं है। वैज्ञानिक चेतना एक विशिष्ट ज्ञान बोध है जो मनुष्य में तार्किक दृष्टिकोण उत्पन्न करता है जिसमें वह किसी भी निर्णय को भावनात्मक रूप से स्वीकार न करके उसका तार्किक दृष्टि से मूल्यांकन करने के पश्चात ही ग्रहण करता है। मध्ययुग में मानव–जीवन आस्था के चारों ओर परिभ्रमण करता रहा परंतु आधुनिक युग इसके विपरीत है यही कारण है कि आस्था केन्द्रित दृष्टि के स्थान पर विज्ञान–सम्मत तर्क दृष्टि का महत्व बढ जाने से धर्म और आध्यात्म निर्भर मध्यकालीन जीवन दृष्टि (और उससे जुडा बोध) उत्तरोत्तर अप्रासंगिक होता गया।''[13] तथा उसका स्थान एक तार्किक दृष्टिकोण ने ले लिया जो विभिन्न प्रश्नों का जनक है जिसने एक द्वन्द्वात्मक स्थिति उत्पन्न की है जिसका निवारण बौद्धिकता द्वारा संभव है। बौद्धिकता व्यक्तित्व और परिवेश की टकराहट का परिणाम ही है, जो आधुनिक साहित्य में बुद्धि–तत्व की प्रधानता को दर्शाता है।

व्यक्ति के संपूर्ण परिवेश की समस्याओं आकांक्षाओं, घटनाओं का अकल्पित यथावत् अंकन यथार्थ है। यह यथार्थ आधुनिकता को आकार प्रदान करता है। आधुनिक रचनाकार का यथार्थ से स्वयं को जोड़े रखना उसे मध्ययुगीनता से अलगाता है। अपने सामयिक परिवेश के प्रति इतनी गहरी जागरूकता रचनाकार में पहले कभी नहीं देखी गई।

परंपरागत यथार्थ और आधुनिक यथार्थ दोनों में तथ्य और तत्व की दृष्टि से भिन्नता होती है। परंपरागत यथार्थ के केन्द्र बिंदु में मुख्यता अध्ययन तथा प्रेम तत्व रहा जबकि आधुनिक कवि ने भूत को अधिक प्रासंगिक नहीं माना। भविष्य उसके लिए एक स्वप्न मात्र है। रचनाकार के चारों ओर एक ऐसी दुनिया है जिसमें भूख, गरीबी, आकाल, मृत्यु का भय, असुरक्षा और युद्ध है। मध्ययुगीनता उसके लिए खण्डहर मात्र है। यथार्थ ने मानव को आधुनिक दौर का केन्द्र बिन्दु बनाया। इस नवीन यथार्थ ने मानव संवेदना को नवीन आयाम देने के साथ ही साथ गतिशीलता दी जिसकी उपलब्धि प्रतिस्पर्धा है। इसने मानव–जीवन की प्राणशक्ति को सोख लिया है। इस जगह पर आकर आधुनिकता कुछ छितरायी हुई नजर आती है।

आधुनिकता बोध को आकार देने में नवजागरण का विशेष महत्व है। नवजागरण से तात्पर्य नवीन चेतना से है जब समाज अपनी निष्क्रियता व स्थूलता को धर्म के नाम पर बाहरी आडम्बरों से ढ़ाके रखता है तथा अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो प्रमाद ग्रस्त होकर घातक रूढ़ियों और आडम्बरों को सब कुछ मान लेता है। यह समय उसकी सुषुप्ति का होता है। ऐसे समय में जब महापुरूष उसमें नवीन विचारधारा को बौद्धिकता व तर्क की कसौटी पर कसते हुए, मानवीय मूल्यों में नवीन चेतना का संचार करते हैं। वह समय नवजागरण कहलाता हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि नवजागरण क्रांतिकारी परिवर्तन करता है तथा नवीनता लाता है तो फिर उसे आधुनिकता क्यों नही कहा जा सकता? इसे आधुनिकता इसीलिए नहीं कहा जा सकता है क्योंकि नवजागरण एक संघर्षशील प्रक्रिया है जबकि आधुनिकता उस संघर्ष का प्रतिफल। यह संघर्षशील प्रक्रिया चीजों की नये रूप में व्याख्या करने के लिए पल–प्रति–पल क्रियाशील रहती है। परंतु जब यह नए आयामों से

आत्मसात कर लेता है तब आधुनिकता का आरंभ होता है।

परंपरा अतीत से वर्तमान तक विभिन्न उतार–चढ़ावों को पार करती हुई आधुनिकता के निकट पहुँचती है। इलियट ने स्वयं को परंपरावादी होने की बात स्पष्ट रूप से की। आधुनिकता अगले दौर में जाकर परंपरा बन जाती है और यदि वह जड़–तत्वों से युक्त है तो आधुनिकता पूरी परंपरा के प्रति अनुदार न होकर उसके जड़–तत्वों के प्रति अस्वीकृति प्रदान करती है तथा मूल्यांकन द्वारा उसके जड़–तत्वों तथा गतिशील तत्वों को पृथक कर परंपरा की नये संदर्भों में व्याख्या करती है। जिससे परंपरा में परिवर्तन के साथ नवीनता आती रहती है।

आधुनिकता के संदर्भ में नीवन दृष्टिकोण को कभी–कभी वाद या विचारधारा मान लिया जाता है। कोई भी वाद या विचारधारा स्वतंत्र नहीं होती है। वह जीवन के किसी विशेष पक्ष को ही परिभाषित करती है किंतु वे स्वयं विकल्प होती है जबकि दृष्टिकोण की स्वतंत्रता उसे विकल्पों की छूट प्रदान करती है। यह दृष्टिकोण अनुभूतियों का ही प्रतिफल होता है। साहित्यकार नवीन–दृष्टिकोण को युग–सापेक्षता के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करता रहता है जो साहित्य में निरंतर विकासशील प्रक्रिया बनी रहती है।

'स्वचेतनता' आधुनिकता का महत्वपूर्ण पक्ष है इसके बिना आधुनिकता को आंशिक रूप से ही समझा जा सकता है क्योंकि ''आधुनिकता का एक रूप अगर आत्मनिष्ठ और आत्मकेन्द्रित है तो दूसरा समाजधर्मी और प्रगतिशील। इन दोनों के तनाव का चित्रण भी समकालीन साहित्य में है और दोनों के सन्तुलन की खोज भी।''[14] वह पक्ष जिस पर आकर आत्मनिष्ठता और समाजधर्मिता विरोधी होते हुए भी एक हो जाती है वही स्वचेतनता है। इनके केन्द्र में व्यक्ति होता है जिसका जीवन और परिवेश के प्रति यथार्थ परक जागृत दृष्टिकोण स्वचेतनता है। स्वचेतनता का एक पक्ष जहाँ व्यक्ति के परिवेश को प्रभावित करता है वहीं दूसरी ओर साहित्य को। क्योंकि ''आधुनिक साहित्य का उद्देश्य है चेतना के सीमान्त का विस्तार या सघनीकरण, संवेदना की व्यापकता या गहनता ग्रहणशीलता की परिपुष्टि या उसकी प्रखरता की स्थिति को यथावत् बनाये रखने की प्रकृति को चुनौती देकर मानसिक विक्षोभ और अरक्षा की चेतना का उभार।''[15]

अब बात रही तीखापन की तो स्वचेतनता शब्द में इतनी ग्रहणशीलता है कि वह परम्परा में पूर्णतः घुल जाती है। रचनाकार में स्वचेतनता न्यूनाधिक रूप में पाई जाती है। केवल इस गुण के कारण वह आधुनिक नहीं माने जा सकते। उसे भावनाओं और संवेदनाओं को गतिशील रूप में ग्रहण करना पड़ता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक लेखक बाह्य परिवेश की अनुभूति अपने अन्तर्जगत में आत्मसात नहीं कर लेता और न समस्याओं से स्वयं नहीं जूझ लेता, तब तक उसके द्वारा रचित साहित्य निष्प्राण ही रहेगा। जब रचनाकार अपने परिवेशगत समस्याओं में पूरी तरह रच बस जाता है तब उसमें एक प्रकार का तीखापन आ जाता है। इस प्रकार का साहित्य किसी तलवार से कम नहीं होता। इसी कारण स्वचेतनता का तीखापन साहित्यगत आधुनिकता को निरंतर धार देने में सक्षम है।

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर यही कहा जा सकता है कि आधुनिकता एक परिवर्तनशील जीवन्त प्रक्रिया है। जहाँ तक औद्योगिकरण का प्रश्न है तो इसे स्थूल रूप से आधुनिकता की पहचान मानना अनुचित न होगा। यदि आधुनिकता को सूक्ष्म रूप से देखें तो विज्ञान के उदय ने मानव–जीवन को नवीन आयाम देने के साथ–साथ मध्ययुगीन ईश्वर केन्द्रित दृष्टि को अप्रासंगिक किया तथा परिवेश के प्रति विवेक सम्मत तर्क दृष्टि को विकसित किया। यह परिवेश के प्रति वह सजगता है जो किसी भी विचार को बिना तर्कों के अस्वीकृत कर देती है।

साहित्य में कहानी एक प्रमुख विधा है जो सदियों से मौखिक व लिखित रूप में हमसे जुड़ी रही हैं। यदि साहित्य की बात करें तो आदिकाल से वर्तमान समय तक अनेक कहानिकारों ने असंख्य कहानियों की रचना की। उन रचनाओं ने पाठक के हृदय पर अमिट छाप भी छोड़ी है। ऐसे ही रचनाकारों में से एक हैं जयशंकर प्रसाद। जयशंकर प्रसाद ने कई विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी किंतु यहाँ जयशंकर प्रसाद की कहानियों में आधुनिकता बोध पर विचार किया जा रहा है। जो इस प्रकार है–

ममता कहानी में जयंशकार प्रसाद ने परंपरा से विरक्ति को दर्शाया। ब्राह्मण और मुगलों के मध्य वह घृणा भाव उस समय समाप्त हो जाता है जब मुगल (बादशाह) ब्रह्मणी से शरण माँगता है। उस समय वह चली आ रही उस विचारधारा के विरूद्ध जाकर स्वचेतना से निर्णय लेते हुए पुरानी परिपाटी का परित्याग कर एक नवीन विचारधारा को अपनाती है वहीं दूसरी और मुगल भी सहायता पाकर उस झोंपड़ी को बनवाने का आदेश देते हैं।

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में विजातीयता, अकेलापन तथा आर्थिक वैषम्य को पात्रों के माध्यम से अत्यन्त सजीवता से प्रस्तुत किया गया है। समान गुण व लक्षण वाली प्रजाति सजातीय व इन्हीं गुणों व लक्षणों से विलग अथवा विपरीत गुणों वाली प्रजाति विजातीय कहलाती है। सजातीयता तथा विजातीयता शब्द प्रजातियों तक सीमित न रहकर मनुष्य के दल, समुदाय तथा जाति व धर्म को भी चिन्हित करते हैं। जयशंकर प्रसाद की कहानी ममता का यह उद्धरण दृष्टव्य है–

मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म–अतिथिदेव की उपासना– का पालन करना चाहिए। परंतु यहां.....
....नहीं–नहीं, ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं।''[16]

यह उद्धरण हिन्दू विशेषतः ब्राह्मणी व मुस्लिम के मध्य विजातीयता को दर्शाता है।

जयशंकर प्रसाद ने अपनी कहानियों में अकेलापन जैसी समस्या को भी समाविष्ट किया है। अकेलापन एक विरक्ति भाव है जो परिस्थिति विशेष से उत्पन्न होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह आधुनिकता बोध से उत्पन्न तथा विविध विचारधाराओं का ही प्रतिफल है। यह स्वभावगत व परिस्थितिगत दोनों ही रूपों में

व्यक्ति को तन्हा महसूस कराता है। 'प्रतिध्वनि' का यह उदाहरण दृष्टव्य है–

''श्यामा निस्सहाय अकेली हो गई। पर जीवन के जितने दिन हैं, वे कारावासी के समान काटने ही होंगे। वह अकेली ही गंगा–तट पर अपनी बारी से सटे हुए कच्चे झोंपडे में रहने लगी।''[17]

तथा 'ममता' कहानी में भी अकेलापन दिखाई पड़ता है। उदाहरणार्थ–

''रोहतास–दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठ हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान की उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख कंटक शयन में विकल थी।''[18]

उपरोक्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं परिस्थितिवश उत्पन्न हुए अकेलापन को। जो आधुनिकता बोध के लक्षण के रूप में उपस्थित है।

जयशंकर प्रसाद की कहानी 'भिखारिन' में पात्रों के मध्य अन्तर्द्वंद्व व आर्थिक वैषम्य को एक ही पंक्ति में अत्यंत कुशलता के साथ पिरोया है जो इस प्रकार से है–

''भाभी! उस पर क्रोध न करो। वह क्या जाने उसकी दृष्टि में सब अमीर और सुखी लोग विवाहित हैं। जाने दो, घर चलें।''[19]

उपरोक्त उदाहरण कहानी के मध्य वैचारिक मतभेद के कारण अंतर्द्वंद्व को दर्शाता है तथा साथ ही समाज में वर्ग भेद को भी चिन्हित करता है। वर्तमान में आर्थिक विषमता एक विकट समस्या के रूप में हमारे समक्ष खड़ी है। समाज को मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु एक लेखक के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए प्रसाद जी ने अपनी इस कहानी में आर्थिक वैषम्य की समस्या को रेखांकित किया है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कहानियों में आधुनिकता बोध के दर्शन स्पष्टतः दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में नवीन विचारधारा को ऐतिहासिकता के साथ प्रस्तुत किया। आधुनिकता बाधे तर्क सम्मत विवेकशील निर्णय है जिसमें वैज्ञानिक चेतना, स्वचेतना का तीखापन, मूल्यबोध, यथार्थ बोध, नवजागरण आदि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह सच है कि आधुनिकता बोध से जटिल कथा परिवेश, आर्थिक, सामाजिक वैषम्य, पात्रगत अन्तर्द्वंद, संबंधों की तलाश और छटपटाहट आदि इसके साथ ही उत्पन्न हो जाते हैं। जयंशकर प्रसाद की कहानियों में यह स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता है।

अंत टिप्पणी

1. *डॉ0 गो0रा0 कुलकर्णी: पौराणिक काव्य : आधुनिक संदर्भ : विद्या विहार,, कानपुर : संस्करण– 1969 : पृ. 17.*
2. *सं0 कालिका प्रसाद : बृहद हिन्दी कोश : ज्ञानमंडल लिमिटेड, नई दिल्ली : संस्करण– 2016 : पृ. 40.*
3. *सम्पा. डॉ. हेमराज निर्मम : आधुनिक हिन्दी साहित्य : हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक : संस्करण– 1980 : पृ.21.*
4. *डॉ. मंजुलता सिंह : हिन्दी कहानी में युगबोध : पराग प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण– 1994 : पृ.2.*
5. *डॉ. गिरिजा कुमार माथुर : नयी कविता : सीमा और सम्भावनाएँ : अक्षर प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण– 1919 : पृ.106.*
6. *डॉ. गिरिजा कुमार माथुर : नयी कविता : सीमा और सम्भावनाएँ : अक्षर प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण– 1919 : पृ.106.*
7. *दिनकर : आधुनिक बोधः पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली : संस्करण– 1973 : पृ.36.*
8. *लक्ष्मीकांत वर्मा : नयी कविता के प्रतिमान : भारती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद : संस्करण–1922 : पृ.258.*
9. *डॉ. अमर सिंह बधान : समकालीन हिन्दी कहानी : प्रकाशन संस्थान, दिल्ली : संस्करण– 1987 : पृ.9.*
10. *साधनाशाह : नई कहानी में आधुनिकता बोध : पुस्तक संस्थान, कानपुर, संस्करण– 1978 : पृ.126.*
11. *साधनाशाहः नई कहानी में आधुनिकता बोध : पुस्तक संस्थान, कानपुर : संस्करण– 1978 : पृ.133.*
12. *साधनाशाह : नई कहानी में आधुनिकता बोध : पुस्तक संस्थान, कानपुर : संस्करण–1978 : पृ.152.*
13. *डा0 नरेंद्र मोहन : आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ : आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 1973 : पृ. 18.*
14. *डा0 नरेंद्र मोहन : आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ : आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 1973 : पृ. 12.*
15. *नैमीचन्द्र जैन : बदलते परिप्रेक्ष्य : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 1968 : पृ. 48.*
16. *जयशंकर प्रसाद : प्रसाद की लोकप्रिय कहानियाँ : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 2012 : पृ. 21.*
17. *जयशंकर प्रसाद : प्रसाद की लोकप्रिय कहानियाँ : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 2012 : पृ. 22.*
18. *जयशंकर प्रसाद : प्रसाद की लोकप्रिय कहानियाँ : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 2012 : पृ. 50.*
19. *जयशंकर प्रसाद : प्रसाद की लोकप्रिय कहानियाँ : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली : संस्करण – 2012 : पृ. 53.*